

375वाँ

सफलतम अंक

वर्ष 32

प्रतियोगिता दर्पण

हिन्दी मासिक

तृतीय अंक

अक्टूबर 2009

इस अंक में

- 433 सम्पादकीय  
435 पाठकों के पत्र  
436 राष्ट्रीय घटनाक्रम  
444 अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम  
449 आर्थिक वाणिज्यिक परिदृश्य  
457 नवीनतम सामान्य ज्ञान  
464 राज्य समाचार  
466 खेलकूद  
470 रोजगार समाचार  
472 विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी  
474 अनुप्रेरक युवा प्रतिभाएं  
478 स्मरणीय तथ्य  
480 विश्व परिदृश्य  
482 आर्थिक लेख—आर्थिक विकास का अर्द्ध-शतक : विश्व आर्थिक मंच पर भारत की उपलब्धियाँ  
486 कैरियर लेख—(i) मीडिया और मनोरंजन उद्योग में रोजगार की सम्भावनाएं  
490 (ii) एस.एस.बी. : सेना के तीनों अंगों में अधिकारी कैसे बनें ?  
494 समसामयिक लेख—(i) परमाणु सम्पन्न देश बनने को आमादा उत्तर कोरिया  
496 (ii) गुटनिरपेक्ष आन्दोलन  
501 सामाजिक लेख—(i) भूमण्डलीकरण के दौर में परिवार का बदलता स्वरूप—एक विश्लेषण  
503 (ii) ललित और दलित साहित्य की वर्गीय अवधारणाएं : विमर्श और विवेचना  
506 दार्शनिक लेख—भारतीय मूल्य व्यवस्था का बदलता स्वरूप वर्तमान परिप्रेक्ष्य में  
509 पर्यावरणीय लेख—पारिस्थितिकी पर्यावरण : आवश्यकता सक्रिय, सार्थक पहल की  
512 राजनीतिक लेख—राष्ट्रीय एकीकरण : समस्या एवं समाधान  
514 कृषि प्रबन्धन लेख—बिहार में खाद्यान्न के उचित प्रबन्धन में जनवितरण प्रणाली की भूमिका  
516 समसामयिक विधि लेख—भारतीय दण्ड प्रक्रिया संहिता में संशोधन कितना जरूरी ?  
518 सार संग्रह  
522 इतिहास—आगामी सिविल सर्विसेज (मुख्य) परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न  
531 वस्तुनिष्ठ सामान्य ज्ञान—(i) आन्ध्रा बैंक मार्केटिंग एसोसिएट्स परीक्षा, 2009  
535 (ii) उत्तराखण्ड पी.सी.एस. (मुख्य) परीक्षा, 2006  
543 (iii) उत्तर प्रदेश सहायक अभियोजन अधिकारी (प्रा.) परीक्षा, 2007  
554 उद्योग व्यापार जगत्  
556 ऐच्छिक विषय—(i) वाणिज्य—सिविल सेवा (प्रा.) परीक्षा, 2009  
566 (ii) समाजशास्त्र—यू.पी. पी.सी.एस. सम्मिलित राज्य/अवर अधीनस्थ सेवा विशेष चयन (प्रा.) परीक्षा, 2008  
572 (iii) अर्थशास्त्र—यू.पी. पी.सी.एस. सम्मिलित राज्य/अवर अधीनस्थ सेवा विशेष चयन (प्रा.) परीक्षा, 2008  
579 (iv) वाणिज्य—उत्तराखण्ड लोक सेवा आयोग (प्रा.) परीक्षा, 2006  
586 सामान्य जानकारी/विविध तथ्य—(i) खनन एवं खनिज क्षेत्र में विकास तथा नई पहलें—एक झलक  
589 (ii) भारतीय संस्कृति एवं कला का वर्तमान परिदृश्य—एक दृष्टि में  
592 (iii) संविधान की अनुसूचियाँ  
593 तर्कशक्ति—आन्ध्रा बैंक मार्केटिंग एसोसिएट्स परीक्षा, 2009  
600 मानसिक एवं संख्यात्मक योग्यता परीक्षा—एम.ई.टी. (एम.बी.ए.) परीक्षा, 2008  
605 संख्यात्मक अभियोग्यता परीक्षा—(i) स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया विशेषज्ञ अधिकारी परीक्षा, 2009  
609 (ii) आन्ध्रा बैंक मार्केटिंग एसोसिएट्स परीक्षा, 2009  
614 वर्णनात्मक भाषा—आन्ध्रा बैंक (पी.ओ.) परीक्षा, 2009  
615 क्या आप जानते हैं ?  
616 अपना ज्ञान बढ़ाइए  
617 प्रश्न आपके उत्तर हमारे  
618 प्रथम पुरस्कृत समीक्षा—न्यायपालिका को कार्यपालिका के नियन्त्रण से मुक्त होना चाहिए  
621 प्रथम पुरस्कृत निबन्ध—हमारी संस्कृति पर केबल टीवी का प्रभाव  
624 निबन्ध प्रतियोगिता क्रमांक—365 का परिणाम  
625 English—Combined Defence Service Examination, 2009

प्रतियोगिता दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. —सम्पादक

## हमें देशभक्त बनना चाहिए

अन्तर्राष्ट्रीयता के वर्तमान युग में कुछ लोग देशभक्ति को संकुचित मानसिकता की द्योतक मानते हैं. वैसे विश्व-कामना की दृष्टि से देशभक्ति एक अनिवार्य सोपान है. महामना पं. मदन मोहन मालवीय ने कहा है कि 'देशभक्ति का संचार हमारे हृदय से स्वार्थपरिता निकाल फेंकता है. हम दूरदर्शी, परमार्थी, सत्यशील और दृढ़ता प्रिय आत्माओं की भाँति असंख्य कष्ट उठाते हुए भी वही करेंगे जिससे देश का भला हो'. विश्व परिवार में देश की इकाई का वही महत्व है, जो समाज में व्यक्ति अथवा शरीर में किसी अंग का महत्व है.

सन् 1947 में भारत और भारतवासी विदेशी दासता से मुक्त हो गए. भारत के संविधान के अनुसार हम भारतवासी 'प्रभुता-सम्पन्न गणराज्य' के स्वतन्त्र नागरिक हैं, परन्तु विचारणीय यह है कि जिन कारणों ने हमें लगभग एक हजार वर्षों तक विदेशी शासन के जुए को ढोने के लिए विवश किया था, क्या वे कारण निःशेष हो गए हैं? जिन संकल्पों को लेकर हमने 90 वर्षों तक अनवरत् संघर्ष किया था, क्या उन संकल्पों को हमने पूरा किया है? उत्तर है, हमारे अन्दर देशभक्ति का अभाव है.

देश की जमीन और मिट्टी से प्रेम होना देशभक्ति का प्रथम लक्षण माना गया है. भारत हमारी माता है, उसका अंग-प्रत्यंग पर्वतों, वनों, नदियों आदि द्वारा सुसज्जित है, उसकी मिट्टी के नाम पर हमें प्रत्येक बलिदान के लिए तैयार रहना चाहिए. राणा प्रताप, शिवाजी से लेकर वीर भगत सिंह, सुभाष चन्द्र बोस, अशफाक उल्ला, गांधी, नेहरू आदि तक वीर-बलिदानियों की परम्परा रही है, परन्तु यह परम्परा हमें प्रेरणा प्रदान नहीं करती है. आज हम अपने संविधान में भारत को इण्डिया कहकर गर्व का अनुभव करते हैं और विदेशियों से प्रमाण-पत्र लेकर गौरवान्वित होने का दम्भ करते हैं. हमारा युवावर्ग भारत के तीर्थ-स्थानों, ऐतिहासिक भवनों, पर्वत शृंखलाओं, वनवासी, आदिवासियों आदि को देखने के लिए कभी भी इच्छुक नहीं दिखाई देता है. उसकी प्रथम वरीयता है—इंग्लैण्ड अथवा अमरीका की यात्रा. विदेशों में अध्ययन के लिए जाने वाले भारतीय छात्रों से जब वहाँ के विद्वान् भारत के बारे में जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं, तो वे बगलें झाँकने लगते हैं.